

وَلِكُلِّ وِجْهَةٍ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۗ أَيْنَ مَا تَكُونُوا  
 يَأْتِ بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ  
 حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَإِنَّهُ  
 لَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَفِيلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ  
 حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ  
 مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ  
 عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ  
 وَأَخْشَوْنِي ۗ وَلَا تَمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾  
 كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا  
 وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا  
 لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾ فَأذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ ۖ وَأَشْكُرُوا لِي  
 وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾

<b>Theme</b>	
The order to face towards Ka'ba as Qiblah during Salah (prayers).	नमाज़ के दौरान क़िब्ला के तौर पर काबा की तरफ़ रुख़ करने का हुक़म।
<b>Tarjumanī</b>	
Everyone has a direction towards which one turns, therefore, emulate one another	हर एक के लिए एक रुख़ है जिसकी तरफ़ वह मुड़ता है   पस तुम भलाइयों की तरफ़ सबकत करो

in good deeds. Wherever you are, Allah will bring all of you together, Allah has power over all things. From where ever you come forth, turn your face during Salah towards the Al-Masjid-al-Haram, this is indeed the Truth from your Rabb. Allah is not unaware of what you do. Again, from where ever you come forth, turn your face during Salah towards the Al-Masjid-al-Haram; and wherever you are, face towards it, so that people will not have any argument against you, except those among them, who are wrongdoers. Do not fear them, fear Me, so that I may perfect My favors to you and that you may be rightly guided just as We bestowed Our favor upon you when We sent among you a Rasool of your own, who recites to you Our revelations, sanctifies you, teaches you the Book and wisdom, and teaches you that which you did not know. Therefore, remember Me, and, I will remember you, be grateful to Me and never

जहाँ भी तुम होंगे, अल्लाह तुम्हें पा लेगा | उसकी कुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं | तुम्हारा गुज़र जिस मक़ाम से भी हो, वहीं से अपना रुख (नमाज़ के वक़्त) मस्जिदे-हराम की तरफ़ फेर दो, क्योंकि यह तुम्हारे रब का बिल्कुल बरहक़ फ़ैसला है और अल्लाह तुम लोगों के आमाल से बेख़बर नहीं है | और जहाँ से भी तुम्हारा गुज़र हो, अपना रुख मस्जिदे-हराम ही की तरफ़ फेरा करो, और जहाँ भी तुम हो, उसी की तरफ़ मुहँ करके नमाज़ पढ़ो ताकि लोगों को तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई हुज़्ज़त न मिले— हाँ, उनमें से जो ज़ालिम हैं, उनकी ज़वाब किसी हाल में बन्द न होगी, तो उनसे तुम न डरो, बल्कि मुझसे डरो— और इसलिए कि मैं तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दूँ और इस तवक्कों पर कि मेरे इस हुक्म की पैरवी से तुम उसी तरह फ़लाह का रास्ता पाओगे जिस तरह (तुम्हें इस चीज़ से फ़लाह नसीब हुई कि) हमने तुम्हारे दरमियान ख़ुद तुममें से एक रसूल भेजा, जो तुम्हें हमारी आयात सुनाता है, तुम्हारी जिन्दगियों को सँवारता है, तुम्हें किताब और हिकमत की तालीम देता है, और तुम्हें वे बातें सिखाता है जो

<p>deny Me.</p>	<p>तुम न जानते थे   लिहाज़ा तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूँगा, और मेरा शुक्र अदा करो, कुफ़राने-नेमत न करो  </p>
<p><b>Tafsir</b></p>	
<p>Each person faces a particular direction so race each other to the good. Wherever you are, Allah will bring you all together. Truly Allah has power over all things. [2:148]</p>	<p>हर शख्स के लिए एक खास सिम्त मुकर्रर है जिस की तरफ़ वह रुख करता है, पस तुम नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो। तुम जहाँ कहीं भी हो गे, अल्लाह तुम सब को इकट्ठा कर लेगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। [2:148]</p>
<p>Each person faces a particular direction</p>	<p>हर शख्स एक खास सिम्त की तरफ़ रुख करता है।</p>
<p>‘Wijhah’ (direction), jihah, and wajh mean the same. What is meant is the qiblah. It means: ‘They do not face your qiblah and you do not face theirs.’ Each has a qiblah, either by the truth or by his own whims and desires. The word ‘faces’ implies that each person with a religion has a qiblah to which he turns. Instead of the reading ‘muwallīhā’, Ibn ‘Abbās and Ibn ‘Āmir recited ‘muwallāhā’</p>	<p>‘विज्हा’ (सिम्त), ‘जिहा’ और ‘वज्ह’ एक ही मअनी रखते हैं। इससे मुराद क़िबला है। इसका मतलब यह है: “वह तुम्हारे क़िबले की तरफ़ रुख नहीं करते और तुम उनके क़िबले की तरफ़ रुख नहीं करते।” हर एक के लिए एक क़िबला है, चाहे वह हक़ के मुताबिक़ हो या अपनी ख़्वाहिशात और नफ़्सानी मेलानात के मुताबिक़। लफ़ज़ “रुख करता है” इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि हर मज़हब रखने वाले शख्स के लिए एक</p>

<p>without naming the subject, and the pronoun in this reading refers to one, i.e. 'each person has a qiblah'. Az-Zajjāj said that. In the majority reading, the pronoun refers to Allah since it is known that Allah is the One Who does that.</p>	<p>क़िबला है जिसकी तरफ़ वह मुतवज्जेह होता है। क़िराअत 'मुवलिहा' के बजाय इब्न-ए अब्बास और इब्न-ए आमिर ने 'मुवलाहा' पढ़ा है जिसमें फ़ाइल का ज़िक्र नहीं किया गया, और इस क़िराअत में ज़मीर "एक" की तरफ़ राजे है, यानी "हर शख्स के लिए एक क़िबला है"। यह बात अज़-ज़ज्जाज ने कही है। जमहूर की क़िराअत में ज़मीर अल्लाह की तरफ़ राजे है, क्योंकि यह बात मालूम है कि यह काम करने वाला अल्लाह ही है।</p>
<p><b>So race each other to the good.</b></p>	<p><b>पस तुम नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो।</b></p>
<p>The primary meaning of the āyah is to hasten to what Allah has commanded regarding the facing of the Masjid al-Harām, although the phrase, in fact, contains encouragement to hasten to all acts of obedience in general. What is meant here is facing the qiblah because of the context. What is meant by 'racing' is to perform the prayer at the beginning of its time, and Allah knows best. An-Nasā'ī related from Abū</p>	<p>इस आयत का बुनियादी मफ़हूम यह है कि अल्लाह ने मस्जिद अल-हराम की तरफ़ रुख़ करने के बारे में जो हुक्म दिया है उसकी तामील में जल्दी की जाए, अगरचे हक़ीक़त में यह इबारत उमूमी तौर पर तमाम इताअत के कामों में जल्दी करने की तरगीब भी देती है। यहाँ सियाक़ व सबाक़ की वजह से क़िबला की तरफ़ रुख़ करना मुराद है। "आगे बढ़ने" से मुराद यह है कि नमाज़ को उसके वक़्त के आगाज़ में अदा किया जाए, और अल्लाह ही बेहतर जानता है।</p>

Hurayrah that the Prophet ﷺ said, 'The metaphor of the one who goes early to the prayer is that of someone who sacrifices a camel. The one after him is like someone who sacrifices a cow. The one after him is like someone who sacrifices a ram. Then the one after him is like someone who sacrifices a chicken and the one after him is like someone who sacrifices an egg.' Ad-Dāraquṭnī reports from Abū Hurayrah that the Messenger of Allah ﷺ said, 'Each of you should pray the prayer at its time. What is at the beginning of the time is better for him than his family and wealth.' Mālik transmitted it from Yaḥyā ibn Sa'īd. Ad-Dāraquṭnī also transmits from Ibn 'Umar that the Prophet ﷺ said, 'The best of actions is the prayer at the beginning of its time.' He also related from Ibrāhīm ibn 'Abd al-Malik from Abū Maḥdhūrah from his father from his grandfather that the Messenger of Allah ﷺ said, 'The beginning of the time is

इमाम नसाई ने अबू हुरैरा से रिवायत किया है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख्स नमाज़ के लिए जल्दी जाता है उसकी मिसाल उस शख्स की तरह है जो एक ऊँट कुर्बान करता है। उसके बाद आने वाला उस शख्स की तरह है जो एक गाय कुर्बान करता है। उसके बाद आने वाला उस शख्स की तरह है जो एक दुंबा कुर्बान करता है। फिर उसके बाद आने वाला उस शख्स की तरह है जो एक मुर्गी कुर्बान करता है और उसके बाद आने वाला उस शख्स की तरह है जो एक अंडा कुर्बान करता है।" दारकुत्नी ने अबू हुरैरा से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से हर शख्स को चाहिए कि नमाज़ उसके वक़्त पर अदा करे। वक़्त के आगाज़ में अदा की गई नमाज़ उसके लिए उसके अहल व अयाल और माल से बेहतर है।" इसे इमाम मालिक ने यह्या बिन सईद से रिवायत किया है। दारकुत्नी ने इब्र उमर से भी रिवायत किया है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "आमाल में सबसे अफ़ज़ल अमल नमाज़ को उसके वक़्त के आगाज़ में अदा करना है।" इसी तरह उन्होंने इब्राहीम बिन अब्दुल मलिक से, अबू महज़ूरा से, उनके वालिद से,

<p>the pleasure of Allah, the middle of the time is the mercy of Allah, and the end of the time is the pardon of Allah.’</p>	<p>उनके दादा से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “वक़्त के आगाज़ में (पढ़ी गई नमाज़) अल्लाह की रज़ा है, वक़्त के दरमियान में (पढ़ी गई नमाज़) अल्लाह की रहमत है, और वक़्त के आख़िर में (पढ़ी गई नमाज़) अल्लाह की माफ़ी है।”</p>
<p>Ibn al-‘Arabī said about this, ‘Abū Bakr said, “I prefer Allah’s pleasure to His pardon. His pleasure is for the good-doers and His pardon is for those who fall short.” That is what ash-Shāfi‘ī preferred. Abū Ḥanīfah said, ‘The end of the time is better because it is the time of the obligation.’</p>	<p>इब्न अल-अरबी ने इस बारे में कहा: “अबू बक्र ने कहा, ‘मैं अल्लाह की माफ़ी के मुक़ाबले में उसकी रज़ा को तरज़ीह देता हूँ। उसकी रज़ा नेक अमल करने वालों के लिए है और उसकी माफ़ी उन लोगों के लिए है जो कोताही करते हैं।” यही राय इमाम शाफ़ई ने भी पसंद की है। अबू हनीफ़ा ने कहा: “वक़्त का आख़िरी हिस्सा बेहतर है, क्योंकि वही वुजूब का वक़्त है।”</p>
<p>Mālik made a distinction, saying that in the case of Ṣubh and Maghrib, the beginning of the time is better. In respect of this he goes by the hadīth of ‘Ā’ishah: ‘The Messenger of Allah ﷺ used to pray Ṣubh when it was dark and the women would leave wrapped in their mantles and could not be recognised due to the</p>	<p>इमाम मालिक ने इसमें फ़र्क किया और कहा कि सुबह (सुब्ह) और मगरिब के मामले में वक़्त के आगाज़ में नमाज़ पढ़ना बेहतर है। इस बारे में वह हज़रत आयशा की हदीस से इस्तिदलाल करते हैं: “रसूलुल्लाह ﷺ सुबह की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते थे जब अभी अँधेरा होता था, और औरतें अपनी चादरों में लिपटी हुई वापस जाती थीं और अँधेरे की वजह से</p>

darkness.’ And in the case of Maghrib, he goes by the hadīth of Salamah ibn al-Akwa‘ that the Messenger of Allah ﷺ prayed Maghrib when the sun set. In the case of ‘Ishā’, it is better to delay it if one is able to do so. Ibn ‘Umar related, ‘We remained that night waiting for the ‘Ishā’ prayer with the Messenger of Allah ﷺ. He came out to us when a third of the night or more had passed and we did not know whether he was doing something with his family or something else. When he came out, he said, “You are waiting for a prayer when none of the people of the dīn except you are waiting for it. If it had not been that it would be onerous for this Community, I would always pray at this time with them.”’ It is related in al-Bukhārī that Anas said, ‘The Prophet ﷺ delayed the ‘Ishā’ prayer to the middle of the night and then prayed...’ Abū Barzah said, ‘The Prophet ﷺ

पहचानी नहीं जाती थीं।” और मगरिब के बारे में वह सलमा बिन अल-अक़वा की हदीस से इस्तिदलाल करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ मगरिब की नमाज़ सूरज गुरूब होते ही पढ़ते थे। और इशा के मामले में अगर मुमकिन हो तो उसे मुअख़्खर करना बेहतर है। इब्न उमर रिवायत करते हैं: “हम एक रात रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इशा की नमाज़ के इंतज़ार में रहे। आप हमारे पास उस वक़्त तशरीफ़ लाए जब रात का एक तिहाई या उससे भी ज़्यादा हिस्सा गुज़र चुका था, और हमें मालूम नहीं था कि आप अपने घर वालों के साथ किसी काम में मशगूल थे या किसी और काम में। जब आप बाहर तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: ‘तुम एक ऐसी नमाज़ के इंतज़ार में हो जिसका इंतज़ार तुम्हारे सिवा अहल-ए-दीन में से कोई नहीं कर रहा। अगर मुझे यह ख़ौफ़ न होता कि यह मेरी उम्मत पर भारी हो जाएगी तो मैं हमेशा इसी वक़्त उनके साथ नमाज़ पढ़ता।” इमाम बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत अनस ने कहा: “नबी ﷺ ने इशा की नमाज़ को आधी रात तक मुअख़्खर किया, फिर उसे अदा किया...” और अबू बरज़ह ने कहा: “नबी ﷺ इशा की नमाज़ को

preferred to delay it.'	मुअख्खर करना पसंद फ़रमाते थे।"
<p>As for Z̤uhr, it arrives at a time when people are inattentive and so it is recommended to delay it a little so that people can prepare and gather together. Abu-l-Faraj said that Mālik said, 'The beginning of the time is better for every prayer except for Z̤uhr when it is very hot.' Ibn Abī Uways said, 'Mālik disliked praying Z̤uhr at midday but did it a little later.' He said that praying exactly at midday is the prayer of the Khārijites. We find in Ṣaḥīḥ Bukhārī and the Ṣaḥīḥ of at-Tirmidhī that Abū Dharr al-Ghifārī said, 'We were with the Prophet ﷺ on a journey and the mu'adhhdhin wanted to give the adhān for Z̤uhr, and the Prophet ﷺ said, "Let it cool." Then again he wanted to give the adhān and the Prophet ﷺ said, "Let it cool." When we saw the shadows of the hillocks, the Prophet ﷺ said, "Intense heat is from the exhalation of Hell. When it is</p>	<p>जहाँ तक जुहर का तअल्लुक़ है तो यह ऐसे वक़्त में आती है जब लोग आम तौर पर ग़फ़लत में होते हैं, इसलिए मुस्तहब है कि इसे कुछ देर मुअख्खर किया जाए ताकि लोग तैयारी कर सकें और इकट्ठे हो जाएँ। अबू अल-फ़रज ने बयान किया कि इमाम मालिक ने कहा: "हर नमाज़ के लिए वक़्त के आगाज़ में पढ़ना बेहतर है सिवाए जुहर के, जब सख़्त गर्मी हो।" इब्न अबी उवैस ने कहा: "इमाम मालिक दोपहर के ऐन वक़्त पर जुहर पढ़ना पसंद नहीं करते थे बल्कि उसे थोड़ा बाद में पढ़ते थे।" उन्होंने कहा कि बिल्कुल ऐन दोपहर पर नमाज़ पढ़ना ख़वारिज की नमाज़ है। सहीह बुख़ारी और सहीह तिर्मिज़ी में अबू ज़र्र ग़िफ़ारी से रिवायत है कि उन्होंने कहा: "हम एक सफ़र में नबी ﷺ के साथ थे। मुअज़्ज़िन ने जुहर की अज़ान देने का इरादा किया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: 'ठंडा होने दो।' फिर उसने दोबारा अज़ान देने का इरादा किया तो आप ﷺ ने फिर फ़रमाया: 'ठंडा होने दो।' जब हमने टीलों के साए देखे तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: 'सख़्त गर्मी जहन्नम की भाप से होती है,</p>

very hot, then pray when it is cooler.” We find in Ṣaḥīḥ Muslim from Anas that the Messenger of Allah ﷺ used to pray Zuhr when the sun declined. That on which both hadīths from Anas agree is that when it was hot, the prayer was delayed until it was cooler. When it was cool, it was brought forward. Abū ‘Īsā at-Tirmidhī said, ‘Some of the people of knowledge prefer to delay the Zuhr prayer when it is very hot. That is the view of Ibn al-Mubārak, Aḥmad and Ishāq.’ Ash-Shāfi‘ī said, ‘Waiting for the Zuhr prayer until it is cooler is when its people come from a distance. When someone prays alone or prays in his local mosque, I prefer him not to delay the prayer in intense heat.’ Abū ‘Īsā said, ‘What is meant by those who delay Zuhr when it is very hot is that it is more appropriate and closer to following [what was done]. As for those who take the position of ash-Shāfi‘ī, that the

लिहाज़ा जब सख़्त गर्मी हो तो नमाज़ को ठंडे वक़्त में पढ़ो।” सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जुहर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते थे जब सूरज ढल जाता था। अनस से मर्वी दोनों अहादीस इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि जब गर्मी ज़्यादा होती तो नमाज़ को ठंडक होने तक मुअख़्खर किया जाता था, और जब मौसम ठंडा होता तो उसे जल्द अदा किया जाता था। अबू ईसा तिर्मिज़ी ने कहा: “अहल-ए-इल्म में से कुछ सख़्त गर्मी के वक़्त जुहर की नमाज़ को मुअख़्खर करने को तरजीह देते हैं। यह इब्न अल-मुबारक, अहमद और इस्हाक़ का क़ौल है।” इमाम शाफ़ई ने कहा: “जुहर की नमाज़ को ठंडक तक मुअख़्खर करना उस वक़्त है जब नमाज़ी दूर से आते हों। लेकिन जो शख़्स अकेला नमाज़ पढ़ता हो या अपनी मक़ामी मस्जिद में पढ़ता हो, मैं पसंद करता हूँ कि वह सख़्त गर्मी में भी नमाज़ को मुअख़्खर न करे।” अबू ईसा ने कहा: “जो लोग सख़्त गर्मी में जुहर को मुअख़्खर करने के क़ाइल हैं, उनका मक़सद यह है कि यही तरीक़ा ज़्यादा मुनासिब और सुन्नत के ज़्यादा करीब है। और जो

<p>allowance is on account of distance and hardship for people, the hadīth of Abū Dharr counters ash-Shāfi'ī's opinion. Abū Dharr said, "We were with the Prophet ﷺ on a journey and Bilāl gave the adhān for Zūhr. The Prophet ﷺ said, 'Bilāl, let it cool. Let it cool.'" If the business had been as ash-Shāfi'ī believed, there would have been no point in waiting for it to cool down at that time because they were gathered together in the journey and did not need to come from afar.'</p>	<p>लोग इमाम शाफ़ई की राय लेते हैं कि यह इजाज़त लोगों की दूरी और मशक्कत की वजह से है, तो अबू ज़र्र की हदीस इमाम शाफ़ई की राय के खिलाफ़ दलील है। अबू ज़र्र ने कहा: 'हम नबी ﷺ के साथ सफ़र में थे और बिलाल ने जुहर की अज़ान दी। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "बिलाल! ठंडा होने दो, ठंडा होने दो।"' अगर मामला वैसा होता जैसा इमाम शाफ़ई समझते थे तो उस वक़्त ठंडा होने का इंतज़ार करने का कोई फ़ायदा न होता, क्योंकि वे सब सफ़र में एक साथ जमा थे और उन्हें दूर से आने की ज़रूरत नहीं थी।</p>
<p>As for 'Aṣr, it is better to do it early in the time. There is no disagreement in our School that when one hopes for a group, it is better to delay the prayer than to do it early in the time. The excellence of the group prayer is known and the excellence of the beginning of the time is unknown. It is better to obtain what is known. Ibn al-'Arabī said that.</p>	<p>रही अस्त्र की नमाज़, तो उसे वक़्त के आगाज़ में अदा करना बेहतर है। हमारे मस्लक में इस बात पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि अगर जमाअत की उम्मीद हो तो नमाज़ को वक़्त के आगाज़ में पढ़ने के बजाय कुछ देर मुअख़्खर करना बेहतर है। जमाअत के साथ नमाज़ की फ़ज़ीलत मालूम और साबित है, जबकि वक़्त के आगाज़ की फ़ज़ीलत ग़ैर-यक़ीनी है। इसलिए मालूम और साबित फ़ज़ीलत को हासिल करना बेहतर है। इब्र</p>

	अल-अरबी ने यही बात कही है।
<b>Wherever you are, Allah will bring you all together.</b>	<b>तुम जहाँ कहीं भी होगे, अल्लाह तुम सब को इकट्ठा कर लेगा।</b>
This is a reference to the Day of Rising. Then Allah describes Himself as having power over all things since that attribute is appropriate for what was mentioned of being brought back to life after death and decay.	यह क्रियामत के दिन की तरफ़ इशारा है। फिर अल्लाह अपने आप को हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला बयान करता है, क्योंकि यह सिफ़त उस बात के मुनासिब है जो ज़िक्र की गई है कि मरने और गल सड़ जाने के बाद दोबारा ज़िंदा करके उठाया जाएगा।
<b>Wherever you come from, turn your face to the Masjid al-Harām. This is certainly the truth from your Lord. Allah is not unaware of what you do. [2:149]</b>	<b>तुम जहाँ से भी आओ, अपना रुख मस्जिद-ए-हराम की तरफ़ करो। यह यक़ीनन तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है। और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। [2:149]</b>
<b>Wherever you come from, turn your face to the Masjid al-Harām. Wherever you are, turn your faces towards it so that people will have no argument against you – except for those among them who do wrong and then you should not fear them but rather fear Me – and so that I can complete My blessing to</b>	<b>तुम जहाँ से भी आओ, अपना रुख मस्जिद-ए-हराम की तरफ़ करो। और तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने चेहरे उसी की तरफ़ फेर लो ताकि लोगों को तुम्हारे खिलाफ़ कोई हुज्जत न रहे — सिवाए उन लोगों के जो उनमें से जुल्म करते हैं — पस तुम उनसे न डरो बल्कि मुझ से डरो — और ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दूँ ताकि तुम</b>

<p><b>you so that hopefully you will be guided. [2:150]</b></p>	<p><b>हिदायत पाओ। [2:150]</b></p>
<p>This is stressing the command to face the qiblah and the importance of that, because the change was very difficult for them. Therefore the command is repeated so that people will see the importance of it and it will be easier for them. It is said that the first command to turn the face is to look at the Ka'bah when you are praying in front of it. Then 'wherever you are' is for the Muslims in all the mosques in Madīnah and elsewhere. This is a command to face it everywhere and in all circumstances.</p>	<p>यह क़िबला की तरफ़ रुख़ करने के हुक्म और उसकी अहमियत पर ज़ोर देना है, क्योंकि क़िबला की तब्दीली उनके लिए बहुत दुश्वार थी। इसलिए हुक्म को दोबारा बयान किया गया ताकि लोग उसकी अहमियत को समझें और उस पर अमल करना उनके लिए आसान हो जाए। यह भी कहा गया है कि चेहरा फेरने का पहला हुक्म उस वक़्त के लिए है जब तुम काबा के सामने नमाज़ पढ़ रहे हो तो उसकी तरफ़ देखो। फिर "तुम जहाँ कहीं भी हो" से मुराद मदीना और दूसरे मुक़ामात की तमाम मसाजिद में मौजूद मुसलमान हैं। यह हर जगह और हर हालत में उसी की तरफ़ रुख़ करने का हुक्म है।</p>
<p>This statement is better than the first one because it gives a benefit to each āyah. Ad-Dāraqūṭnī related that Anas ibn Mālik said, 'When the Prophet ﷺ was on a journey and wanted to pray on his camel, he faced the qiblah and said the takbīr and then prayed in whatever direction it turned.' Abū</p>	<p>यह बात पहली राय से बेहतर है, क्योंकि इस तरह हर आयत को एक मुस्तक़िल फ़ायदा हासिल होता है। दारकुत्नी ने रिवायत किया है कि अनस बिन मालिक ने कहा: "जब नबी ﷺ सफ़र में होते और अपनी ऊँटनी पर नमाज़ पढ़ना चाहते तो पहले क़िबला की तरफ़ रुख़ करते, तकबीर कहते, फिर जिस सिम्त</p>

<p>Dāwud also transmitted it. Ash-Shāfi'ī, Abū Thawr and Aḥmad said that. Mālik believed that you are not obliged to face Makkah, going by the hadīth of 'Umar in which he said, 'The Messenger of Allah ﷺ used to pray facing from Makkah towards Madīnah on his camel.' 'Wherever you turn, the Face of Allah is there' (2:115) was revealed about this.</p>	<p>ऊँटनी मुड़ती उसी सिम्त नमाज़ पढ़ते रहते।" इसे अबू दाऊद ने भी रिवायत किया है। यही राय इमाम शाफ़ई, अबू थौर और इमाम अहमद की है। इमाम मालिक का ख़याल था कि (सफ़र में नफ़ल नमाज़ के लिए) मक्का की तरफ़ रुख़ करना लाज़िम नहीं है। वह इस बारे में हज़रत उमर की हदीस से इस्तिदलाल करते हैं जिसमें उन्होंने कहा: "रसूलुल्लाह ﷺ अपनी ऊँटनी पर मक्का से मदीना की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ा करते थे।" और आयत "तुम जिधर भी रुख़ करो, अल्लाह का चेहरा वहीं है" (2:115) इसी मामले के बारे में नाज़िल हुई थी।</p>
<p>There is no contradiction between the two hadīths because this is part of the legal area of texts which are unrestricted or restricted, so the position of ash-Shāfi'ī is more fitting and the hadīth of Anas is sound. It is related that Ja'far ibn Muḥammad was asked about the meaning of the repetition of stories in the Qur'an. He said, 'Allah knows that all people do not know the</p>	<p>इन दोनों अहादीस में कोई तज़ाद नहीं है, क्योंकि यह नुसूस के उस फ़िक्ही दायरे से तअल्लुक़ रखती हैं जिसमें कुछ नुसूस मुतलक़ और कुछ मुकय्यद होती हैं। इसलिए इमाम शाफ़ई का मौक़िफ़ ज़्यादा मुनासिब है और हज़रत अनस की हदीस सहीह है। रिवायत है कि जाफ़र बिन मुहम्मद से कुरआन में किस्सों की तकरार के मअनी के बारे में पूछा गया। उन्होंने कहा: "अल्लाह जानता है कि तमाम लोग कुरआन को</p>

<p>Qur'an by heart. If there was no story repeated, then it would be possible that only some people would know the story. It is repeated so that everyone will know it.'</p>	<p>ज़बानी याद नहीं रखते। अगर कोई किस्सा बार-बार न दोहराया जाता तो मुमकिन था कि सिर्फ़ कुछ ही लोग उसे जानते। इसलिए उसे दोहराया गया ताकि हर शख्स उसे जान सके।”</p>
<p><b>so that people will have no argument against you –</b></p>	<p><b>ताकि लोगों को तुम्हारे खिलाफ़ कोई हुज्जत न रहे।</b></p>
<p>Mujāhid said that the ‘people’ referred to here are the Arab idolaters and their argument is what they said about the qiblah. It is said that the meaning of this is: ‘So that they will not say to you, “You are commanded to face the Ka’bah yet you cannot see it.”’ This was removed when He said: ‘Wherever you are, turn your faces towards it.’ Abū Ishāq az-Zajjāj said, ‘It means that Allah has acquainted you with the argument about the qiblah in His words: “Each person faces a particular direction.” “So that people will have no argument against you” except for someone who is unjust in his argument when the business is,</p>	<p>मुजाहिद ने कहा कि यहाँ “लोगों” से मुराद अरब के मुशरिकीन हैं और उनकी हुज्जत वह बात है जो उन्होंने क़िबला के बारे में कही थी। यह भी कहा गया है कि इसका मतलब यह है: “ताकि वह तुम से यह न कहें कि तुम्हें काबा की तरफ़ रुख़ करने का हुक्म दिया गया है लेकिन तुम उसे देख नहीं सकते।” यह इशकाल उस वक़्त खत्म हो गया जब अल्लाह ने फ़रमाया: “तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने चेहरे उसी की तरफ़ फेर लो।” अबू इस्हाक अज़-ज़ज्जाज ने कहा: “इसका मतलब यह है कि अल्लाह ने तुम्हें क़िबला के बारे में हुज्जत से आगाह कर दिया है अपने इस क़ौल में: ‘हर शख्स एक खास सिम्त की तरफ़ रुख़ करता है।’ ‘ताकि लोगों को तुम्हारे खिलाफ़ कोई हुज्जत न रहे’ सिवाए उसके जो अपनी हुज्जत</p>

<p>in fact, clear to him. It is as you say, “You have no argument except being unjust” or “merely in order to wrong me.” “You have no definitive argument. You are merely wronging me.” So the argument is called “injustice” even though it is invalid.’ Qutrub said that it is possible that it means: ‘So that only those who are unjust can argue against you.’ At-Ṭabarī said, ‘Allah made it clear that no one has evidence against the Prophet ﷺ and the Companions regarding their facing the qiblah.’ It means that they only have a baseless argument in their remarks about that.</p>	<p>में जुल्म करे, हालाँकि हकीकत उस पर वाज़ेह हो चुकी हो। यह ऐसा ही है जैसे तुम कहते हो: ‘तुम्हारे पास कोई हुज्जत नहीं सिवाए जुल्म के’ या ‘महज़ मुझे जुल्म करने के लिए।’ यानी ‘तुम्हारे पास कोई क़तई दलील नहीं, तुम सिर्फ़ मुझ पर जुल्म कर रहे हो।’ इस तरह उस हुज्जत को “जुल्म” कहा गया है अगरचे वह दरअसल बातिल है।” कुतरुब ने कहा कि मुमकिन है इसका मतलब यह हो: “ताकि सिर्फ़ वही लोग तुम्हारे खिलाफ़ हुज्जत करें जो ज़ालिम हैं।” इमाम तबरी ने कहा: “अल्लाह ने वाज़ेह कर दिया कि नबी ﷺ और सहाबा के क़िबला की तरफ़ रुख़ करने के बारे में किसी के पास उनके खिलाफ़ कोई दलील नहीं है।” यानी उनके पास इस बारे में सिर्फ़ बे-बुनियाद बातें और दावे ही हैं।</p>
<p><b>and then you should not fear them but rather fear Me –</b></p>	<p><b>और फिर तुम उनसे न डरो बल्कि मुझ से डरो –</b></p>
<p>‘Khashyah’ (fear) derives from the lack of tranquillity in the heart about what to expect, while khawf is the alarm of the heart which makes the limbs tremble. The āyah calls</p>	<p>‘ख़शियत’ (ख़ौफ़-ए-ख़ुदा) दिल में इस बात के बारे में बे-इत्मीनानी से पैदा होती है कि आगे क्या पेश आएगा, जबकि ‘ख़ौफ़’ दिल की ऐसी घबराहट है जिससे आज़ा काँपने लगते हैं। यह आयत इस बात की</p>

<p>attention to the fact that all that is other than Allah is insignificant. The command is for people to cast aside their own affairs and to obey the command of Allah.</p>	<p>तरफ़ तवज्जोह दिलाती है कि अल्लाह के सिवा बाक़ी सब कुछ बे-हक़ीक़त और ग़ैर-अहम है। इसमें लोगों को हुक़्म दिया गया है कि वह अपने ज़ाती मामलात को एक तरफ़ रख दें और अल्लाह के हुक़्म की इताअत करें।</p>
<p><b>and so that I can complete My blessing to you</b></p>	<p><b>और ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दूँ।</b></p>
<p>According to az-Zajjāj, this refers to Allah making His chosen qiblah known to them. The completion of guidance is being guided to the qiblah. It is said to be admitting them into the Garden. Sa'īd ibn Jubayr said, 'Allah's blessing to His slave is not complete until He admits him to the Garden.'</p>	<p>अज़-ज़ज्जाज के मुताबिक़ इससे मुराद यह है कि अल्लाह ने अपने मुन्तख़ब किए हुए क़िबला को उन पर वाज़ेह कर दिया। हिदायत की तकमील का मतलब क़िबला की तरफ़ रहनुमाई होना है। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद उन्हें जन्नत में दाख़िल करना है। सईद बिन जुबैर ने कहा: "अल्लाह की नेमत अपने बंदे पर उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होती जब तक वह उसे जन्नत में दाख़िल न कर दे।"</p>
<p><b>For this We sent a Messenger to you from among you to recite Our Signs to you and purify you and teach you the Book and Wisdom and teach you things you did not know before. [2:151]</b></p>	<p><b>इसी तरह हम ने तुम में से ही एक रसूल तुम्हारी तरफ़ भेजा जो तुम्हें हमारी आयात पढ़ कर सुनाता है, तुम्हें पाक करता है, और तुम्हें किताब और हिकमत सिखाता है, और तुम्हें वह बातें सिखाता है जो</b></p>

	तुम पहले नहीं जानते थे। [2:151]
<p>Al-Farrā' said that it means: 'So that I can complete My blessing to you by completing the like of what you have been sent with.' Ibn 'Aṭīyyah said that this is the best view, meaning: 'So that I can complete My blessing to you in clarifying that the sunnah of Ibrāhīm is like what We have sent to you.' It is said that it means: 'Perhaps you will be guided to a similar guidance as that We sent previously.' It can also mean: 'I will complete My blessing to you in this state,' and the blessing in respect of the qiblah resembles the blessing of the Message, and the remembrance commanded is immense like the blessing. There can also be a change in the normal word order so that it means: 'Remember Me as We sent you...' The view related from 'Alī, which is preferred by az-Zajjāj, is that it means: 'As We sent a Messenger from among you whom you</p>	<p>फ़र्रा' ने कहा कि इसका मतलब यह है: "ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत को मुकम्मल करूँ, उस जैसी नेमत को मुकम्मल करके जिसके साथ तुम्हें भेजा गया है।" इब्र अतिय्या ने कहा कि यह राय सबसे बेहतर है, यानी: "ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत को मुकम्मल करूँ इस बात को वाज़ेह करके कि इब्राहीम की सुन्नत वही है जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजी है।" यह भी कहा गया है कि इसका मतलब यह है: "शायद तुम उस जैसी हिदायत की तरफ़ रहनुमाई पाओ जैसी हमने पहले भेजी थी।" यह भी मुमकिन है कि इसका मअनी यह हो: "मैं इस हालत में तुम पर अपनी नेमत मुकम्मल करूँगा।" और क़िबला के बारे में जो नेमत है वह रिसालत की नेमत के मुशाबेह है, और जिस ज़िक्र का हुक्म दिया गया है वह भी उसी नेमत की तरह अज़ीम है। यह भी मुमकिन है कि कलाम की मामूली तरतीब में तब्दीली हो, जिसका मतलब हो: "मुझे याद करो जिस तरह हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा..." हज़रत अली से मनकूल क़ौल, जिसे अज़-ज़ज्जाज ने तरजीह</p>

<p>recognise to be truthful, remember Me with tawhīd and affirmation of him.’ This is also what at-Tirmidhī al-Hakīm preferred: ‘As I have given you these blessings that I have enumerated to you, remember Me with gratitude and I will remember you with an increased reward because your remembering that is thanking Me and I have promised an increased reward for thankfulness.’ He says: ‘If you are grateful, I will certainly give you increase.’ (14:7)</p>	<p>दी है, यह है कि इसका मतलब है: “जिस तरह हमने तुम में से एक रसूल भेजा जिसे तुम सच्चा जानते हो, तो तुम मुझे तौहीद के साथ और उसकी तसदीक के साथ याद करो।” यही राय तिर्मिज़ी अल-हकीम ने भी पसंद की है: “जिस तरह मैंने तुम्हें वह नेमतें अता की हैं जिनका मैंने तुम्हारे सामने ज़िक्र किया है, तो तुम मुझे शुक्र के साथ याद करो और मैं तुम्हें ज़्यादा अज़्र देकर याद करूँगा, क्योंकि तुम्हारा यह याद करना दरअसल मेरा शुक्र अदा करना है, और मैंने शुक्र के बदले में ज़ियादती का वादा किया है।” अल्लाह तआला फ़रमाता है: “अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज़रूर और ज़्यादा दूँगा।” (14:7)</p>
<p><b>Remember Me – I will remember you. Give thanks to Me and do not be ungrateful. [2:152]</b></p>	<p><b>तुम मुझे याद करो — मैं तुम्हें याद करूँगा। और मेरा शुक्र अदा करो और नाशुक्रि न करो। [2:152]</b></p>
<p><b>Remember Me – I will remember you.</b></p>	<p><b>मुझे याद करो — मैं तुम्हें याद करूँगा।</b></p>
<p>Allah’s remembering of us signifies reward. The root meaning of the word for ‘remembering’ (dhikr) is to be aware with the heart of what is</p>	<p>अल्लाह का हमें याद करना दरअसल अज़्र देने के मअनी में है। “ज़िक्र” का बुनियादी मअनी यह है कि दिल के साथ किसी चीज़ को याद रखना और उससे बा-ख़बर होना। ज़बान के साथ</p>

<p>remembered and awake to it. Dhikr with the tongue is called dhikr because it indicates the remembrance of the heart. It is often used, however, with reference to the spoken words and phrases employed in its performance.</p>	<p>किया जाने वाला ज़िक्र भी ज़िक्र कहलाता है क्योंकि वह दिल की याद-दहानी की तरफ़ इशारा करता है। हालांकि अक्सर इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल उन अल्फ़ाज़ और जुमलों के लिए भी किया जाता है जो ज़िक्र के तौर पर अदा किए जाते हैं।</p>
<p>The āyah means: ‘Remember Me by obeying Me and I will remember you with the reward and forgiveness,’ as Sa‘īd ibn Jubayr said. He also said, ‘Dhikr is obeying Allah. Anyone who does not obey Him, does not remember Him, even if he does a lot of glorification, shahādah and recitation of the Qur’an.’ It is related that the Prophet ﷺ said, ‘Anyone who obeys Allah has remembered Allah, even if he has not done much prayer, fasting or good action. Anyone who disobeys Allah has forgotten Allah, even if he has done a lot of prayer, fasting and good action,’ as Abū ‘Abdullāh Muḥammad ibn Khuwayzimandād mentions in</p>	<p>इस आयत का मतलब यह है: “मुझे मेरी इताअत के ज़रिये याद करो और मैं तुम्हें अज़्र और मग़फ़िरत के साथ याद करूँगा,” जैसा कि सईद बिन जुबैर ने कहा। उन्होंने यह भी कहा: “ज़िक्र दरअसल अल्लाह की इताअत है। जो शख्स उसकी इताअत नहीं करता वह अल्लाह को याद नहीं करता, चाहे वह कितना ही ज़्यादा तस्बीह, शहादत और कुरआन की तिलावत क्यों न करे।” रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख्स अल्लाह की इताअत करता है वह अल्लाह को याद करता है, अगरचे उसने ज़्यादा नमाज़, रोज़ा या नेक अमल न किया हो। और जो शख्स अल्लाह की नाफ़रमानी करता है वह अल्लाह को भूल जाता है, अगरचे उसने बहुत नमाज़, रोज़ा और नेक अमल किए हों।” यह रिवायत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन ख़ुवैज़मंदाद</p>

<p>Aḥkām al-Qur'ān. Abū 'Uthmān an-Nahdī said, 'I know a moment in which Allah remembers us.' He was asked, 'How do you know that?' He answered, 'Allah Almighty says: "Remember Me – I will remember you."' As-Suddī said, 'A person does not remember Allah without Allah remembering Him. A believer does not remember Allah without Allah remembering him with mercy. An unbeliever does not remember Allah without Allah remembering him with the punishment.'</p>	<p>ने अहकाम अल-कुरआन में ज़िक्र की है। अबू उस्मान अन-नहदी ने कहा: "मैं उस वक़्त को जानता हूँ जब अल्लाह हमें याद करता है।" उनसे पूछा गया: "तुम्हें यह कैसे मालूम है?" उन्होंने जवाब दिया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'मुझे याद करो — मैं तुम्हें याद करूँगा।'" अस-सुद्दी ने कहा: "कोई शख्स अल्लाह को याद नहीं करता मगर यह कि अल्लाह भी उसे याद करता है। मोमिन जब अल्लाह को याद करता है तो अल्लाह उसे रहमत के साथ याद करता है, और काफ़िर जब अल्लाह को याद करता है तो अल्लाह उसे अज़ाब के साथ याद करता है।"</p>
<p>Someone said to Abū 'Uthmān an-Nahdī, 'We remember Allah but we do not experience any sweetness in our hearts.' He said, 'Praise Allah Almighty for the fact that He has adorned one of your limbs with obedience!' Dhu-n-Nūn al-Miṣrī said, 'Anyone who really remembers Allah, forgets everything except His remembrance and Allah preserves him from every bad</p>	<p>किसी शख्स ने अबू उस्मान अन-नहदी से कहा: "हम अल्लाह को याद करते हैं मगर हमारे दिलों में कोई मिठास महसूस नहीं होती।" उन्होंने कहा: "अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि उसने तुम्हारे आज़ा में से एक अजू को अपनी इताअत से आरास्ता कर दिया है!" जुन्नून अल-मिस्री ने कहा: "जो शख्स हकीकत में अल्लाह को याद करता है वह उसकी याद के सिवा हर चीज़ को भूल जाता है, और अल्लाह उसे हर बुराई से</p>

<p>thing and is his redress for everything.’ Mu‘ādh ibn Jabal said, ‘The son of Ādam does not do any action which will be more effective in saving him from the punishment of Allah than dhikr of Allah.’</p>	<p>महफूज़ रखता है और हर मामले में उसका सहारा बन जाता है।” मुअज़ बिन जबल ने कहा: “इब्र-ए-आदम कोई ऐसा अमल नहीं करता जो उसे अल्लाह के अज़ाब से बचाने में अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा मोअस्सिर हो।”</p>
<p>There are many hadīths on the virtue of dhikr and its reward. Ibn Mājah reports from ‘Abdullāh ibn Yūsuf that a Bedouin said to the Messenger of Allah ﷺ, ‘The laws of Islam are a lot for me. Tell me something on which I can really concentrate my efforts.’ He said, ‘Let your tongue remain moist with the remembrance of Allah Almighty.’ It is transmitted that Abū Hurayrah reported that the Prophet ﷺ said, ‘Allah Almighty says, “I am with My noble slave when he remembers Me and moves his lips with My Name.”’ This subject will be discussed in greater depth elsewhere.</p>	<p>ज़िक्र की फ़ज़ीलत और उसके अज़्र के बारे में बहुत सी अहादीस वारिद हुई हैं। इब्र माजह ने अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ से रिवायत किया है कि एक बदवी ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा: “इस्लाम के अहकाम मेरे लिए बहुत ज़्यादा हैं, मुझे कोई ऐसी बात बताइए जिस पर मैं पूरी तवज्जोह के साथ क़ायम रह सकूँ।” आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारी ज़बान हमेशा अल्लाह तआला के ज़िक्र से तर रहनी चाहिए।” रिवायत है कि अबू हुरैरा ने बयान किया कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला फ़रमाता है: ‘मैं अपने उस मुअज़्ज़ज़ बंदे के साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है और मेरे नाम के साथ अपने होंठ हरकत देता है।’” इस मौजू पर मज़ीद तफ़सील दूसरी जगह बयान की जाएगी।</p>

<p><b>Gives thanks to Me</b></p>	<p><b>मेरा शुक्र अदा करो।</b></p>
<p>Thankfulness (shukr) is to acknowledge kindness received and to speak of it. The linguistic root of shukr means 'to display'. So Allah's slave shows his thankfulness by mentioning Allah's goodness to him and the Real thanks the slave by praising him for obeying Him.</p>	<p>शुक्र का मअनी यह है कि मिलने वाली नेमत और एहसान को तस्लीम किया जाए और उसका ज़िक्र किया जाए। लुगवी एतिबार से शुक्र का अस्ल मअनी "ज़ाहिर करना" है। पस बंदा अल्लाह का शुक्र इस तरह अदा करता है कि वह उसकी नेमतों और एहसानात का ज़िक्र करता है, और अल्लाह अपने बंदे का शुक्र इस तरह अदा करता है कि उसकी इताअत पर उसकी तारीफ़ करता है।</p>
<p><b>and do not be ungrateful.</b></p>	<p><b>और नाशुक्री न करो।</b></p>
<p>Do not be ungrateful for Allah's blessings. The word kufir here means to cover up the blessing, not total disbelief.</p>	<p>अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री न करो। यहाँ "कुफ़र" से मुराद नेमत को छुपाना है, न कि मुकम्मल बे-ईमानी।</p>